# आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

**Date**: 1 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

**धारणा** - *आज **शिवरात्रि** के महान पर्व पर अपने आप को शिवबाबा पर बलिहार करने का पुरुषार्थ करे*

शिवरात्रि की जिसे हम **शिव जयन्ती** कहते है सभी दैवी कुल की महान आत्माओं को बहुत बहुत मुबारक हो।

हम सभी की तो रात्रि खतम हो गई है। ज्ञान सूर्य ने आकर सत्य ज्ञान का प्रकाश देकर हमारी रात्रि को समाप्त कर दिया।

रात्रि में हम भटक रहे थे। चोर लुटेरे हमारी सुख शान्ति को लुट रहे थे। अब हमें राह मिल गई। अस्त्र-शस्त्र मिल गये ज्ञान योग के। तो अंधकार भी दूर हो गया। लुटेरे भी भाग गये प्रकाश के कारण।

तो हम शिवबाबा के बहुत बहुत आभारी है, शुक्रगुज़ार है। जिसने कलियुग की घोर रात्रि में आकर हमें दिन में ले लिया। संगमयुग पर अपना बना लिया।

तो हम सभी अब शिवबाबा से जुड़े हुए है। अब हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम दूसरों के अंधकार को दूर करे। अनेक भक्त आज व्रत भी रखा रहे है। और जागरण भी करेंगे।

भक्त तो भांग धतूरा भी पी लेते है। सोचते नहीं शिव आकर चले जाये तो देखेंगे कैसे? अनुभव कैसे करेंगे?

वे कहते शंकर जी भी भांग धतूरा पीते थे, जो कि बिल्कुल गलत है। यह देवताओं की ग्लानि है।

बात है ईश्वरीय नशा करने की। जितना हम ईश्वरीय नशें में रहते है, हमारी एकाग्रता बहुत अच्छी होती है। और तब ही सम्मुख आये हुए निराकार शिवबाबा को हम देख सकेंगे। पहचान सकेंगे।

जिसको इन आखों से नहीं देखा जा सकता, चर्मचक्षु उसे देखने में सक्षम नहीं है। उसको देखने के लिए तो ज्ञान का तीसरा नेत्र ही चाहिए।

तो सभी ईश्वरीय नशें में आ जाये। पहला नशा यही है कि ....

**" हम उसके सन्तान है .. भगवान के बच्चे है .. अधिकारी बच्चे है .. वह हमारा है तो .. उनका सबकुछ भी हमारा है "**

जब वह हमारा पिता है और उससे हमारे मन में मिलन की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न होती है तो इससे सिद्ध होता है कि वो आकर हमसे मिलता अवश्य है।

हम तो उसके पास जा नहीं सकते, हमें पता ही नहीं वो कहाँ है? कोई कैलास पर्वत पर ढूंढते है तो कोई कहते है उसे ढूँढे क्यो? अंदर ही है।

अरे अंदर तो कीचड़ा भरा हुआ है। गंदगी विषय विकारों का। और कहते है भगवान अंदर है। भूत जहाँ होते है वहाँ भगवान होते है क्या?

तो वो मिलने के लिए आता है। और यह समय चल रहा है उससे मिलन का। भक्ति तो करके बहुत देख ली। जागरण भी कर लिए। आया नहीं वो आपके पास अब तक।

लेकिन अब वो स्वयं आकर आपको जगा रहा है। अगर अब भी न जागे, जब वो खुद जगा रहा है तो सोये ही रहेंगे जब महाविनाश होगा।

इसलिए महादेव जी का डमरू बजे, महाविनाश के लिए वो तान्डव नृत्य करे, उसके पहले हम जाग जाये ताकि हम उसके साथ नृत्य में सामिल हो सके।

विनाश की विभीषिका हमें दुःखी न करे, कष्ट न दे। तो प्रैक्टिकल शिवरात्रि चल रही है। शिव और उसके भक्तों का। शिव और उसके बच्चों का यह श्रेष्ठ मिलन हो रहा है।

आपको भी निमन्त्रण है। जिन्हें मिल गये उनको भी बधाई है। और जिन्हें नहीं मिले उनको निमन्त्रण है ....

" आओ .. जिसके पूजा करते रहे उससे **मिलन का परम सुख प्राप्त करो** .. अब पूजा नहीं .. उसके बच्चे बनने का समय है .. अब अंधकार में रहने का नहीं .. ज्ञान लेकर अपने चित को प्रकाशित करने का समय है "

तो सभी भक्तों को व्रत रखने के साथ आज यह भी संकल्प कर लेना है कि ...

**" हमें किसी बूराई से मुक्त होने का व्रत लेना है "**

जैसे शिवबाबा पर चढ़ाते है ना? अक के फूल, कांटे। वैसे ही आज आप भी बूराईयों को चढ़ाओ। अपने को भी चढ़ा दो। तब ही यह सच्ची सच्ची शिवरात्रि होगी। और जीवन धन्य धन्य हो जायेगा।

।। ओम शान्ति ।।

**BK Google**: www.bkgoogle.org

**Website**: www.shivbabas.org